सामुदायिक कक्षाओं के ज़रिए प्रभावी प्रक्रियाओं को क़ायम रखना

दुर्गेश कुमार मानेराव

पिछले दो वर्षों के दौरान स्कूल बन्द रहने पर हममें से अधिकांश शिक्षकों ने किसी-न-किसी रूप में अपने विद्यार्थियों से सम्पर्क बनाए रखने की कोशिश की है। विशेषकर, समुदाय में छोटे समूहों की कक्षाओं के माध्यम से। इससे जो दो महत्त्वपूर्ण सीख मिलीं, वह थीं— पहली, बच्चे कला के ज़रिए ख़ुद को अभिव्यक्त कर सकते हैं। और ऐसा बच्चों ने उन विविध गतिविधियों के माध्यम से किया जो मैंने उनके लिए तैयार की थीं। इससे उनके कुछ-न-कुछ नया सीखने का सिलसिला चलता रहा। दूसरी, हमने महसूस किया कि स्कूल के आम दिनों में भी हमें कुछ इसी तरह से काम करना चाहिए। साथ ही स्थानीय संसाधनों को अपने शिक्षण में शामिल करना चाहिए ताकि बच्चे सहजता से काम कर सकें।

मैंने बच्चों से लोकगीतों पर बात की। उनसे कहा कि वे अपने मम्मी-पापा से पूछें कि उन्हें शादी और अन्य त्योहारों पर गाए जाने वाले कौन-कौन से गीत आते हैं। उनसे कहा कि उनकी कुछ पंक्तियाँ याद करके आएँ और समूह में सुनाएँ। यह गतिविधि बच्चों को सहज और ख़ुश करने में काफ़ी हद तक मददगार रही। हमने एक-दूसरे के गीत सुने और सुनाए भी। मैंने एक मराठी और एक बुन्देलखण्डी गीत सुनाया। बच्चों ने सुनाना शुरू किया तो मारवाड़ी और स्थानीय गीतों की जैसे झड़ी लगा दी। पर हम इसे लिखित रूप नहीं दे पाए। आगे स्कूल के सामान्य दिनों में इस गतिविधि को अच्छे-से करने की योजना है।

> कला में मानवीय गतिविधियों और क्षमताओं की अत्यधिक विविध श्रेणी शामिल होती है। यही कारण है कि इसने महामारी की चिन्ता और प्रभावों को कम करने में बच्चों की मदद की। बच्चों के कला-कार्य में जुड़े रहने से सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न हुई। अभिभावकों ने भी यह समझा कि कला हमारे शिक्षण और शिक्षा का एक हिस्सा है।

हमने मुख्य रूप से गीत लिखने, धुन बनाने और गीत गाने पर काम किया। एक-दो जागरूकता गीत बच्चों ने कम्पोज़ किए। इनका उपयोग हमने कोरोना फेरी[1] में किया। इससे बच्चों की क्रिएटिविटी को एक नई दिशा मिली जो स्कूल के सामान्य दिनों से अलग थी। शुरुआत में गीत की धुन किस तरह बनाएँ इसको लेकर काफ़ी बात की। ख़ूब गीत सुने। अतिरिक्त ध्यान देकर गीत सुनाने और क्या समझ में आया इस पर ग्रुप के सभी बच्चों ने अपने अनुभव घर पर साझा किए। कक्षा पाँचवीं से आठवीं तक के बच्चों ने कुछ धुन बनाईं। धुन बनाना, गीत लिखना, स्थानीय रूप से उपलब्ध साधनों का उपयोग कर वाद्य यन्त्रों को बनाना आदि पर काम हुआ। बच्चों को बस ज़रा-सा हिंट देने की ज़रूरत पड़ी। बतौर शिक्षक इससे एक सबक़ यह मिला कि इस तरह का काम, जो बच्चों की सृजनात्मकता को बढ़ाता है, आम दिनों में भी जारी रखना चाहिए। उच्चतर प्राथमिक विद्यालयों की कक्षाओं में संगीत की संक्षिप्त थ्योरी पर काम किया जाना चाहिए। स्थानीय संसाधनों का प्रयोग कर संगीत सिखाने सम्बन्धी नए विचार के साथ आगे काम करने की ज़रूरत है।

विगत समय में कक्षा में ताल और सुर पर बहुत कम काम हुआ है। इन दोनों पक्षों पर ज़्यादा काम करना पड़ेगा। अच्छे साउंड सिस्टम के साथ लोक संगीत, लाइट म्यूजिक सुनने से मदद मिलेगी। इस दौरान हमने देखने-सुनने के ज़्यादा अवसर बच्चों को मुहैया कराए। इससे उनके अनुभव में वृद्धि हुई है और उनकी यह सीख प्रस्तुति के समय भी दिखाई देती है।

संगीत की कक्षा में संगीत-यंत्रों के साथ काम की एक अलग भूमिका होती है। बच्चे संगीत-यंत्र से सहज होते हैं और उनका कौशल भी बढ़ता है। समुदाय में काम का जो अनुभव रहा है उससे यह सबक़ मिला कि हम यंत्र बनाने को लेकर एक रचनात्मक काम भी कर सकते हैं। हम देख सकते थे कि बच्चे अपने सुने हुए गाने को एक नए कलेवर में अपने बनाए वाद्य के साथ कितनी अच्छी तरह प्रस्तुत करते हैं। इस काम को कक्षा में एक सुनियोजित तरीक़े से करने और इस पर नज़र रखे जाने की ज़रूरत है कि एक उचित अन्तराल तक संगीत सुनने, सीखने के बाद बच्चे किस तरह की प्रतिक्रिया करते हैं। क्या सभी बच्चों में ताल का पैटर्न बनाने की क़ाबिलियत होती है? क्या जिन बच्चों के साथ हमने संगीत पर काम किया है उनका पैटर्न उन बच्चों से कुछ अलग है जिनके साथ हमने काम नहीं किया? कोई नया बच्चा हमारे साथ काम करे तो उसमें किस तरह के अलग पैटर्न दिखते हैं? क्या बच्चा एक तय समय तक संगीत में वक़्त गुज़ारने के बाद प्रकृति में संगीत के पैटर्न को समझकर अपनी प्रस्तुति में उसका प्रयोग करता है? यह कुछ सवाल हैं जिनके जवाब बच्चों के साथ काम करते हुए एक सुनियोजित तरीक़े से खोजे जाने चाहिए। इसे दस्तावेज़ के रूप में भी लिखकर रखना चाहिए जिससे आगे कोई और भी काम

करना चाहे तो उसे मदद मिले। आगामी दिनों में बच्चों के साथ काम करने की हमारी कुछ इस तरह की रणनीति रहेगी।

आगामी कार्य-रणनीति

हमने समुदाय स्कूल में कुछ अच्छे अभ्यास किए थे। यह अभ्यास स्कूल वापिस जाने पर बच्चों को सहज महसूस करने में मदद करेंगे। ऐसा एक अभ्यास अनुभव-लेखन का था। इस काम को बच्चों ने बहुत मन लगाकर किया और कक्षा में एक-दूसरे के साथ चर्चा भी ख़ूब की। उदाहरण के लिए, एक बच्चे ने सफ़ाई को लेकर अपना अनुभव साझा किया। उस पर कक्षा के अन्य बच्चों ने भी अपनी-अपनी बात रखी।

संगीत में भी मैं यह सम्भावना देखता हूँ। हम संगीत सुनाने के उपरान्त अपने अनुभव बच्चों को लिखकर लाने के लिए कह सकते हैं। इससे हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि वह किसी ख़ास तरह का संगीत सुनते समय क्या महसूस करते हैं। बच्चे किसी ख़ास उम्र में संगीत को लेकर क्या सोचते हैं यह भी हमारे पास लिखित रूप में रह सकता है, इससे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है। किसी गतिविधि के बारे में लिखना और स्वतंत्र रूप से अपने विचार रखना भी भाषा का उद्देश्य है, इसलिए दोनों साथ–साथ चल सकते हैं। एक सवाल यह भी है कि इस तरह के काम की अवधि क्या हो? स्वतंत्र रूप से यदि कोई बच्चा संगीत की कक्षा में अपने अनुभव इस तरह से सुनाता है तो उसे आगे अकादमिक विषयों, जैसे कि भाषा से किस तरह जोड़कर देखा जाए।

स्थानीय संसाधन का उपयोग

यह बात तो हम सभी जानते हैं कि स्थानीय भाषा या सन्दर्भ का प्रयोग करने से बच्चों को किसी विषय की बेहतर समझ बनाने में मदद मिलती है। अपने आसपास के उदाहरण से सिखाने के कई सारे तरीक़े उपयोग में लिए जा सकते हैं। इसी क्रम में संगीत की बात करूँ तो हमें स्थानीय गीतों को कक्षा में गाना चाहिए और लोकगीतों का अच्छा संकलन तैयार करने के लिए इन्हें लिखना चाहिए। कौन-से लोकगीत कब गाए और बजाए जाते हैं, इन गीतों में किस तरह के वाद्य इस्तेमाल होते हैं इस पर भी बात की जा सकती है। और इस पर भी कि हमारे शास्त्रीय संगीत में गीतों का वर्गीकरण किस तरह से हुआ है आदि। इसे हम एक प्रोजेक्ट कार्य के रूप में भी देख सकते हैं। यह गतिविधि कक्षा पाँचवीं से सातवीं के बच्चों के साथ की जा सकती है। आगे की कक्षाओं में इसे अन्य विषयों के साथ अधिक एकीकृत तरीक़े से किए जाने की सम्भावना दिखती है। जैसे कि सामाजिक अध्ययन में किसी स्थानीय प्राचीन इमारत/मन्दिर/बावड़ी/घुमन्तू समुदाय और उनकी संस्कृति आदि की खोजबीन करना।

संगीत में आवाज़ को समझने, यंत्रों की आन्तरिक व बाहरी संरचना और उनके आवाज़ उत्पन्न करने की विधियों आदि की पड़ताल की जा सकती है। जैसे कि बच्चों को घरों में ख़ाली पड़े कनस्तर, टिन के डिब्बे, गत्ते, रबर, प्लास्टिक की बोतल, कोई धातु का टुकड़ा या पत्थर के टुकड़े आदि बजाने के लिए देना ताकि बच्चे बोर नहीं हों और एक नए पन के साथ सक्रिय सहभागिता करें ।

और भी कई तरह के संसाधनों की श्रेणियाँ हो सकती हैं:

श्रेणी 1 : विद्यालय में उपलब्ध संसाधन, जैसे कि कला और शिल्प और संगीत शिक्षक।

श्रेणी 2 : विद्यालय के बाहर उपलब्ध संसाधन, जैसे कि स्थानीय कलाकार, कुम्हार, कृषि, बम्बू का काम करने वाले, समुदाय में मौजूद कोई कला का जानकार व्यक्ति, घरों में पड़े अनुपयोगी सामान।

श्रेणी 3 : प्राकृतिक वातावरण में संसाधन, जैसे कि नदी, पेड़ों, पत्तों आदि की आवाज़ सुनना और संगीत में इनका किस तरह उपयोग करें, इसके तरीक़े खोजना।

अकादमिक विषयों के साथ जोड़कर काम करना

जहाँ भी संगीत को अन्य विषयों के साथ जोड़कर काम करने की सम्भावना हो, वहाँ साथी शिक्षकों के साथ मिलकर इस सम्भावना को तलाशना चाहिए। उदाहरण के लिए बेकार या अनुपयोगी सामान से संगीत वाद्य यंत्र बनाना। एक सत्र विज्ञान के शिक्षक के साथ लिया जा सकता है यह समझने के लिए कि ध्वनि किस तरह उत्पन्न होती है। यंत्र की बनावट किस तरह की होनी चाहिए? क्या सभी ध्वनियाँ संगीत में उपयोग की जा सकती हैं? एक संगीत शिक्षक भी इस बारे में बहुत-सा काम बच्चों के साथ कर सकता है कि संगीत के लिए किस प्रकार की ध्वनि उपयोगी है और इसकी योजना कक्षा के स्तर के अनुसार बनाई जा सकती है।

वर्तमान में हम पहली से तीसरी कक्षा में काम कर रहे हैं और लगभग एक से डेढ़ घण्टे अन्य विषय के शिक्षकों के साथ रहते हैं। शिक्षक विभिन्न विषयों के बेहतर इंटीग्रेशन के अवसर का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे मुझे भी उनके काम को समझने में मदद मिल रही है।

ज़मीनी गतिविधियाँ

मैं सत्र की शुरुआत ध्यान से करता हूँ। हम मोबाइल पर सॉफ्ट तानपुरे की ध्वनि बजाते हैं और कुछ मिनटों तक उसे सुनते हैं और बच्चे मेरे निर्देशों का पालन करते हैं कि संगीत सुनते समय साँस किस तरह लें। इसके बाद हम गीतों से शुरुआत करते हैं। बच्चे अभिनय करते हुए गाते हैं। इसमें शिक्षक भी शामिल होते हैं। बच्चे बड़े और छोटे समूहों में गाते हैं।

फिर शिक्षक बच्चों से गीत में आए कोई पाँच शब्द पूछती

हैं, जिसे वह एक छोटे कार्ड पर लिखती हैं। इस गतिविधि में अब बच्चों की बारी आती है। वह बच्चों को दो समूहों में बाँटती हैं और कार्ड को दिखाकर उन्हें शब्द पढ़ने के लिए कहती हैं। बच्चे पढ़ने की कोशिश भी करते हैं और एक-दूसरे की मदद भी। दूसरा समूह पहले समूह के बच्चों को देखता है और अपनी बारी आने पर वह ग़लती नहीं करता जो शब्दों के उच्च्चारण में पहले समूह ने की थी। इसके बाद बच्चों से बात की जाती है कि उन्हें शब्द पहचानने में क्या दिक़्क़त हुई। दूसरे समूह ने क्या रणनीति अपनाई। दूसरी गतिविधि में गीत में आए किसी पात्र को चयनित कर, उसके आधार पर होमवर्क दे दिया जाता है। तो इस प्रकार सहज तरीक़े से संगीत और भाषा का शिक्षण हो रहा है। मैंने बच्चों की प्रस्तुति, गीत की धुन, अभिनय, आत्मविश्वास, एकल और युगल गायन भी देखा। इसमें भाषा-शिक्षण के तमाम पहलू जैसे कि सुनना, याद करना, भाव से गाना और लेखन भी शामिल किए जा सकते हैं। इस गतिविधि को हम अँग्रेज़ी राइम के अभ्यास के समय भी काम में ले सकते हैं।

कुछ बच्चे हैं जो कक्षा में शान्त रहते हैं। किसी भी गतिविधि में ज़्यादा सहभागिता नहीं करते। हम संगीत के माध्यम से उनकी सहभागिता को बढ़ाने के लिए अधिक अवसर प्रदान कर सकते हैं और उन्हें उन तरीक़ों से ख़ुद को अभिव्यक्त करने में मदद कर सकते हैं, जिनमें वे सहज महसूस करते हैं। संगीत और कला खुशी-ख़ुशी सीखने के लिए ज़्यादा अवसर प्रदान कर सकते हैं शिक्षक को इस बात पर ध्यान देना चाहिए व इसका आकलन करना चाहिए कि हमारे प्रयास एक शर्मीले बच्चे की किस तरह से मदद कर रहे हैं या कि हमें रणनीतियाँ बदलने की ज़रूरत है।

समय बनाम असर

यह सभी गतिविधियाँ समय की माँग करती हैं। व्यक्ति का स्कूल या स्कूल के समूह में किस तरह से समायोजन हो जिससे संगीत में रिसर्च की जा सके? इसमें नए तरह से सोचने और काम करने की बहुत सम्भावना है। एक तरीक़ा है कि शुरू से ही बहुत अभ्यास के साथ संगीत सिखाएँ। हम स्कूल में संगीत-शिक्षण को किस रूप में देखते हैं और वहाँ पर किस तरह से काम किया जाना चाहिए इस पर भी काम करने की ज़रूरत मालूम पड़ती है।

"संगीत की धुन और संगीत के स्वरों का सौन्दर्य मनुष्य के बौद्धिक और नैतिक विकास का महत्त्वपूर्ण साधन है" (*बाल हृदय की गहराइयाँ*, वसीली सुखोम्लीन्सकी)। यहाँ संगीत सिखाने का मतलब यह नहीं कि बच्चों को कलाकार बनाना है। जिस तरह अकादमिक विषयों से बच्चों का मानसिक विकास होता है उसी तरह संगीत की शिक्षा से आत्मशिक्षा का विकास होता है। संगीत शिक्षण भी उन्हें आगे बेहतर इन्सान बनाने और दुनिया को सुन्दर बनाए रखने में मदद करेगा जो कि शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य भी है। सभी विद्यालयों में संगीत पर एक पूर्ण विषय की तरह नहीं तो कम-से-कम सुनियोजित तरीक़े से काम अवश्य सुनिश्चित होना चाहिए।

Endnotes

i Similar to the *Prabhat Pheri* (literally, morning round), which is a procession of people singing religious hymns, the Corona *Pheri* is meant to spread awareness messages on COVID-19 within a locality.

दुर्गेश कुमार मानेराव, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान में संगीत के शिक्षक हैं। मूलत: मध्य प्रदेश के छिन्दवाड़ा ज़िले के रहने वाले दुर्गेश अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ 2016 से काम कर रहे हैं। इससे पहले उन्होंने बोध शिक्षा समिति, जयपुर में काम किया है। उन्होंने छत्तीसगढ़ के खैरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय से वाद्य संगीत में एमफिल किया है। उनसे durgesh.manerao@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।